द्वितीय अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों का विषयगत विवेचन"

द्वितीय अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों का विषयगत विवेचन"

विवेच्य उपन्यासों मे प्राप्त ग्रामीण 'नारी—जीवन' का चित्रण इस अध्याय में किया है। 'चाक' और 'अगनपाखी' इन दो उपन्यासों के विषयगत विवेचन के लिए उनकी कथावस्तु जान लेना आवश्यक प्रतित होता है। 'चाक' उपन्यास में नारी के प्रति सामाजिक हिंसा, वैधव्य जीवन, विधवा नारी का शोषण, तथाकथित व्यभिचार के नाम पर नारी—हत्या तथा भ्रूणहत्या की समस्या सामने आती है। 'अगनपाखी' में छोटी उम्र की लडकी का विवाह, इसकी इच्छा—अनिच्छा, पारिवारिक शोषण, नारी—दमन, तथा अस्वस्थ दांपत्य जीवन आदि समस्याओं को चित्रित किया है।

२.१ 'चाक' उपन्यास की कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय :—

मैत्रेयी पुष्पाजी का विवेच्य उपन्यास प्रकाशन क्रम से चौथा उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन ईसवी सन १९९७ में हुआ। इसकी कथा वस्तु ब्रज प्रदेश के ग्रामीण जीवन से संबंधीत है।

विवेच्य उपन्यास की नायिका के रूप में सारंग हमारे सामने आती है। अतरपुर में घटित हुई घटना का चित्रण इस उपन्यास में किया है। अतरपुर की आबादी करीब एक हजार के आसपास है। इस गॉव में अनेक नारीयों की हत्या हुई है। खेरापतिन दादी सारंग गॉव की स्त्रीयों की हत्याओं की श्रृंखला बताती है। इसमें सारंग की विधवा बहन रेशम का नाम भी जुड गया है।

सारंग की फूफेरी बहन का नाम है रेशम। उसके पति करमवीर फौज में नौकरी करते थे। एक दिन वह विषैली दारू पीकर मर जाता है। और रेशम विधवा बन जाती है। पति के मृत्यु के बाद पाच छ महीनों में वह गर्भवति बन जाती है। रेशम पचीस साल की छोटी उम्र में ही विधवा बन जाती है। वह दिखने में तो सुंदर थी पर वह अपने यौन भावनाओं को काबू में नही रख पाती और गलती कर बैठती है। यह बात रेशम खुद ही अपनी सास को बताती है इसपर सास हुकुम कौर उसे भला–बुरा कहकर गालियॉ देती है। इस झूठ को छिपाने के लिए वह देवर डोरिया की बॉह पकडने को कहती है। लेकिन रेशम इस बात से इन्कार करती है। जब रेशम इस बात को तैयार नही होती तब उसे मारने की कोशिश करती है। एक बार तो बच्चा गिराने की शर्तिया दवा देती है लेकिन गिलास के हाथ से छुट जाने के कारण उसकी जान बच जाती है। रेशम की बहन सारंग को जब इस बात की खबर मिलती है तो वह उसे अपने घर ले जाना चाहती है। रेशम अपने बहन की गृहस्थी उजड न जाएँ इसलिए उसके साथ जाने से इन्कार करती है। उसे लगता है कि ससूरालवाले उसका नाम जीजा रंजीत से जोड़ सकते है। रेशम, सारंग को कहती है कि सास और देवर डोरिया का सामना करने के लिए उसके हौसले बुलंद है।

कुछ दिनों के बाद रेशम के सुसराल का वातावरण बदल जाता है। घर के सभी लोग उसके साथ प्यार से व्यवहार करते है। इन लोगों का यह दिखावा रेशम जानने में असमर्थ रही। लेकिन सारंग के मन में जिस बात का डर था वहीं हुआ। जिस तरह बलि के बकरे को खुब खिलाया पिलाया जाता है, उसी तरह रेशम को भी उन लोगों ने बलि के बकरे की तरह शिकार बनाया। सारंग सोचती है,

"मेरी बहन को कबूतर और हिरन की तरह ही भरमाकर मौत के घाट उतार दी। "[१]

रेशम का साथ गॉव के किसी भी आदमी ने नहीं दिया। गॉव के लोगो के खोखले विचारों के कारण रेशम को अपने बच्चे के साथ खुद की भी जान गॅवानी पडी। सिर्फ सारंग ही रेशम का दु:ख जान सकी। उसीने ही रेशम का साथ दिया। और सारंग ने अपनी बहन के हत्यारों को शिक्षा देने की बात ठान ली।

सांरग के पति रंजीत, जो एम.एस्सी. (ॲग्री) हुए है, उनसे प्रेरित होकर सांरग डोरिया पर रेशम के हत्या के जुर्म में केस दायर करते है और उसे हवालात भेज देते है। रेशम की मृत्यु के वक्त तोता की बहू ने देखा था कि रेशम बिटौरे के निचे गाड दी गयी है और डोरिया पूरी ताकत लगाकर उलटे फावडे से बिटौरा ढहा रहा है रेशम के ऊपर। इसके अलावा रामजी ब्राह्मण ने भी डोरिया को वहॉ देखा था। ये दोनो भी गवाहों के रूप में वहॉ हाजिर थे। लेकिन डोरिया के बडे भाई थानसिंग मास्टरने गवाहों के बयान बदल दिए और पेशवर गवाहों की मदद से अपने छोटे भाई डोरिया को बाइज्जत बरी कराया। तब रंजीत के हौसले लुढ़कने लगते है। रंजीत के पिता गजाधरसिंह और पत्नी सारंग के हामी भरने पर उसने हायकोर्ट में अपील करने का निश्चय किया। सारंग और डोरिया के परिवारजनों में संघर्ष चल पडता है।

रेशम का देवर डोरिया सारंग के साथ बदसलुकी करता है। उसे बीच रास्ते में रोककर उसके बेटे चंदन को मारने की धमकी देता है। सारंग की इज्जत पर हाथ डालता है। तब सारंग उसका प्रतिकार

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक, पृ. क्र. २१

करती है। बाद में वह उनके घर के गाय के बछडे पर विष–प्रयोग करता है। इन बातों से घबराकर रंजीत अपने बेटे चंदन की सुरक्षा के लिए चिंतीत होता है। बाद में रंजीत अपने बेटे चंदन को आगरे में स्थित पुलिसिया बडे भाई दलवीर के पास भेज देता है। इसके लिए सारंग और उसे पिताजी विरोध करते है। सारंग अपने बेटे को छोडकर अकेली नहीं रहना चाहती। उसे अपने बेटे की याद सताती है। रंजीत भी कोर्ट–कचहरी से तंग आकर अपनी खेती बेचकर आगरे में व्यापार करने की बात सोचता है। इस बात से सारंग उदास होती है। उसे अपने पुराने दिन भी याद आते है। गुरूकुल की कन्याओं का घुटन और आपबीति भी याद आती है। उसके रिश्तेदार केलासिंह पहलवान गॉव के मल्लयुद्ध में डोरिया को हराते है, तब सारंग के मन को शांति मिल जाती है।

गॉव के प्रधान फत्तेसिंह ने रंजित और डोरिया के भाई थानसिंह मास्टर को आपस में झगडा छोडकर दोनों मे सुलाह करवाई। भवानीसिंहद्वारा प्रधानी हथियाकर राज करने का डर फत्तेसिंह को था इसलिए दोनो को समझा बुझा दिया। फिर रंजीत फत्तेसिंह के घर सद्भावनापूर्वक आने–जाने लगा। उसी वक्त अतरपुर के स्कूल में नए मास्टर श्रीधर आ जाते है। श्रीधर मास्टरद्वारा सिखाया गया पद चट्टा चौथ के त्यौहार में उसका भाषण सुनकर सारंग उसमें बुलंद हौसले को देखती है। इस त्यौहार में सारंग टीका करते समय श्रीधर मास्टरजी के चरण छूती है। तब गॉव के लोग एक जाटिनद्वारा कुम्हार के पॉव छुने की कानाफूसी करते है। कुछ लोग इसका गलत अर्थ निकालते है।

डोरिया और रंजीत के बीच के लडाई अंदर ही अंदर चल रही थी। डोरिया के भाई भूरा में प्रतिशोध की भावना थी। इसलिए वह

रंजीत की धुलाई करता है। बाद में भूरा के बडे भाई थानसिंह ओर पिता साधजीने रंजीत से माफी मॉगते है। हायकोर्ट में अपील करने के लिए तीन महीने की मोहलत शेष थी। इसलिए वह लोक रंजीत से माफी मॉगने का ढोंग करते है। उनकी इस माफी का ढोंग करने की बात बाबा गजाधरसिंहद्वारा समझाने के बाद भी रंजीत उनकी नियत में शक करना व्यर्थ समझता है।

रंजीत पंचायत का सदस्य बनने के लालच में प्रधान फत्तेसिंह के झुंड में शामिल हो जाता है। रंजीत की इस लालसा को देखकर सारंग उदास हो जाती है। दोनो में झगडा होता है। श्रीधर मास्टर जो कुम्हार जाति के थे उनके सारंगद्वारा चरणस्पर्श की बात सुनकर रंजीत क्रोधीत होता है। फिर भी वह श्रीधर को अपने घर बुलाता है। सारंग के ससूर बाबा गजाधरसिंह से श्रीधर मास्टर की घनिष्टता बढ़ती है। इसलिए उसका घर में अक्सर आना—जाना लगा रहता है। सारंग भी श्रीधर की बातों से प्रभावित होती है। और उसके प्रति धीरे—धीरे आकर्षित होती है। गॉववालों की श्रीधर और सांग के बारे में चर्चा सुनकर रंजीत सारंग पर शक करने लगता है। और अपनी दुर्दशा के लिए सारंग को जिम्मेदार ठहराता है। इस बात को लेकर सारंग खुद को बेसहारा और निराधार महसुस करती है। अपने बेटे की याद में वह विकल हो जाती है। सारंग चंदन को चिट्ठी भेजती है। अपनी मॉ की चिठ्ठी पाकर चंदन आगरे से भागने की कोशिश करता है। इसीकारण वश उसके चाचा दलवीर उसे अतरपुर में छोड देते है। चंदन को पाकर सारंग को आनंद होता है। कुछ दिनों के बाद सारंग के प्रति रंजीत के मिजाज बदल जाते है। अब उसे न श्रीधर से कोई शिकायत है और न सारंग के प्रति कोई शक है। लेकिन लोग दोनों के संबंधो पर शक करते है और रंजीत के कान भरते है।

अतरपुर की पाठशाला में श्रीधर मास्टर के रूप में नए—नए आए थे। उनका तबादला इस गॉव में इसलिए हुआ था क्योंकि अनमेल विवाह का शिकार बनी केका को अपने प्रेमी के साथ भाग जाने में श्रीधरजी का हाथ था। ऐसा सभी लोग मानते है। बसंत पंचमी का मेला देखने गयी गुलकंदी श्रीधरजी के साथ जाती है लेकिन वापस नही आती। लोगों को लगता है कि उसने अपने प्रेमी बिसनुदेवा के साथ गंधर्वविवाह किया होगा। गॉव के लोग इसके लिए श्रीधर मास्टर को जिम्मेदार मानकर उसके खिलाफ हो जाते है। केका की बातें सुनकर सारंग और रंजीत भी श्रीधर से नफरत करते है। लेकिन श्रीधर मास्टर अपने आपको बेकसूर होने की सफाई देकर सारंग की नफरत दूर करता है।

अतरपुर गॉव के पंचायत चुनाव नजदीक आते है। तब रंजीत भी फत्तेसिंह प्रधान के साथ विकास कार्यो में हिस्सा लेता है ताकि लोगों की हमदर्दी मिल सके। चुनाव के लिए रूपए जमा करने लगते है। इसके लिए स्कूल की पुरानी इमारत को नई इमारत बनाकर फंड जमा करने की योजना बनाते है। लेकिन इस बात के लिए श्रीधर मास्टर तैयार नहीं होता और फंडसंबंधी अर्जी पर दस्तखत नहीं करता है। इसके बाद रंजीत के साथ दुसरा खेल खेलता है। वह रंजीत पर प्रधान बनने का नशा चढ़ाता है और चुनाव के खर्च के लिए फंडसंबंधी अर्ज पर श्रीधर के दस्तखत लेकर उसे मनाने की बात कहता है लेकिन सारंग अपने पति रंजीत को इन सब बातों के लिए विरोध करती है। और उसपर बौखला उठती है। रंजीत भी डरा—धमका कर श्रीधर मास्टर के दस्तखत लेना चाहता है। इसके लिए वह अपने साथियोंद्वारा धमकाने की कोशिश करता है, तब भी वह नहीं मानता तो वह रात के वक्त श्रीधर की बुरी तरह से पिटाई

करता है। इसी कारण श्रीधर को अस्पताल दाखिल किया जाता है। उसकी सेवा करने के लिए सारंग अस्पताल जाना चाहती है, तो रंजीत उसे मना कर देता है। उसे मना करने पर भी सारंग अपने ससूर बाबा गजाधरसिंह की रजामंदी से अस्पताल जाती है और श्रीधर की परिचर्या करती है। बाद में अस्पताल से लौटकर श्रीधर को लौंगसिरी बीबी के घर ठहराया जाता है। समय मिलने पर सारंग उसे देखने भी जाती है।

एक दिन सारंग श्रीधर को देखने रात के समय जाती है और श्रीधर के प्रति अपना समर्पण कर बैठती है, वहीं पर उसे नींद लगती है, उसी समय रंजीत सारंग को ढुँढते हुए वहाँ आ जाता है और उसे इस हालत में देखकर मारने–पीटने लगता है। बाबा गजाधरसिंह बीच में आकर सारंग का बचाव करते है। रंजीत को घर आकर बाबा गजाधरसिंह समझाते हुए कहते है, "बेटा हम जाट हैं। खुले मन की कौम मानी गई हमारी। ब्राह्मण–बनियों की तरह पाखंडी होना भारी पडेगा हमें। क्योंकि जो खुले और बहादुर संस्कार हमारे खून में है, वहीं दबंगपना हमारी बैयरों में। लुगाइयों के लहँगा की चौकीदारी करना हमें शोभा नहीं देता। जुल्म–सितम की मारी इनसानियत को महफूज रखने को जनमती हैं हमारी पीढ़ीयाँ। xxx नादान! पहले तू खुद बहू के काबिल बन। ऐसा उचक्कपन करेगा तो कौन सी औरत गले लगा लेगी? हमारी बहादुरी पर अंगरेजोकी मैमे तक मर मिटती थी।" इसके बाद रंजीतने सोचना शुरू किया कि अपनी जिंदगी क्यों उलझती जा रही है। रंजीत में धीरे–धीरे बदलाव आने लगता है। श्रीधर मास्टर के प्रति उसका क्रोध भी कम होने लगता है। एक दिन रंजीत उसे होली के अवसर पर अपने घर लाता है। उसी दिन गुलकंदी की माँ को किसीने घर में आग लगाकर मार डाला। इस

दुर्घटना को गॉव में ही निपटाने की कोशिश फत्तेसिंह प्रधान करते है। पर सारंग इस घटना से जुडे गवाहों को जुटाने का आश्वासन दरोगाजी को देती है अतरपुर में इतने बडे हादसे होते है फिर भी गॉव के सभी व्यवहार पूर्ववत शुरू होते है। लेकिन सारंग इस हादसे को भूल नहीं पाती।

फत्तेसिंह प्रधान गॉव में राजनितीके दॉव—पेच खेलता है। इसके लिए वह साजिश करके इस हत्याकांड के खतावार हरपरसाद को पकड़वा देता है। फत्तेसिंह चुनाव में आगामी प्रधानी के लिए अवरोधक हरपरसाद और थानसिंह दानों का पत्ता छॉट देता है। इस बात की खबर जब सारंग को होती है। तब उसे अंदाजा होता है कि अब वह रंजीत को भी साजिशद्वारा चुनाव से छॉट देगा। चुनाव का माहौल गॉव में जोरो—शोरो से शुरू होता है लेकिन रंजीत खुद पर विश्वास रखकर फत्तेसिंह पर अवलंबित रहता है। वह अपनी हिम्मत और योग्यता खोने लगता है। गॉव में चुनावी दौर, जोरों से शुरू हो जाता है। चुनावी हालात को देखकर श्रीधर मास्टर और सारंग के ससूर गजाधरसिंह साथ में भॅवर भी प्रधानी पद के लिए रंजीत के बजाय सारंग को योग्य समझते है। क्योकि सभी सारंग को साहसी, समझदार, दृढसंकल्पी और व्यवहार कुशल मानते है और चुनाव के लिए उसका पर्चा भरने का निश्चय करते है। सारंग एक पत्नी होने के नाते पति रंजीत से चुनावी मुकाबला करने में आनाकानी करने लगती है। सारंग के पति रंजीत दो दिन घर नहीं आते तो वह उनसे कोई परामर्श नहीं करती। वह एक नारी होने के नाते पतिधर्म, नारीधर्म और राजधर्म में उलझ जाती है।

प्रधान पद के लिए पर्चा भरने हेतु सारंग अपने चचेरे भाई भॅवर के साथ तहसील कार्यालय में पहुॅच जाती है। उसे पर्चा भरते देख

फत्तेसिंह हक्का–बक्का हो जाता है। उसकी स्थिति अधमरे सी हो जाती है और क्रोध में आकर भी वह शांतीसें चुपचाप देखता रहता है। भय से डरी हुई सारंग अपने घर लौटती है लेकिन ससूर बाबा गजाधरसिंह का सहारा पाकर चैन की सॉस लेती है। सारंग के चुनाव में शामिल होने के कारण रंजीत गुस्सा उसपर उतर आता है। और वह सारंग से बदला लेना चाहता है। इस हेतु रंजीत अपने बेटे चंदन को आगरा भेजने लगता है लेकिन सारंग के क्रोध को देखकर वह हक्का–बक्का हो जाता है और अपना सारा क्रोध भॅवर पर उतार देता है। रंजीत, सारंग के सामने प्रस्ताव रखता है कि वह कुॅवरपाल से रूपया लेकर अपना पर्चा वापस ले। लेकिन सारंग इस प्रस्ताव को ठुकराती है। वह अपना ईमान बेचना नहीं चाहती। इस चुनावी दौर में गैरकानुनी और अमानवीय हथकंडो का बोलबाला रहता है।

चुनाव के दौरान गॉव में कुॅवारपालद्वारा शराबी पार्टी का आयोजन किया जाता है उसमें फत्तेसिंह, दरोगाजी आदि मान्यवर आते है। उनके साथ रंजीत भी उसमें शरीक हो जाते है। इस पार्टी में सारंग की चुनावी जीत का अनुमान लगाकर बुथ कैप्चरिंग की बात सोची जाने लगती है। इस बुथ कैप्चरिंग जैसी गैरकानुनी बात और सारंग के साथ खुद के प्रति लोगों के मुॅह से अपशब्द सुनकर रंजीत के आत्मसम्मान को गहरी ठेंस पहॅचती है। वह लोगों की बातों से उत्तेजित होकर नशे में सॅवार होकर सबको वह एक साथ पीटने लगता है। रंजीत लोगों के ताने सुनकर आत्मपराजित होता है और अपने घर लौंट जाता है। घर में आते ही उसे जानी पहचानी गंध आने लगती है और सारंग के प्रति अपनेपन का एहसास उसमें आ जाता है। यहॉ उपन्यास की समाप्ती दिखाई है।

❖ निष्कर्ष :—

मैत्रेयी पुष्पाजी का विवेच्य उपन्यास अपनी मौलिकता लिए हुए हमारे सामने आता है। विवेच्य उपन्यास में ब्रजप्रदेश का चित्रण किया है। इसमें अतरपुर गॉव की सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण किया है। इसमें उत्तर भारतीय गॉवो की विकास प्रक्रिया का चित्रण प्रतिनिधीक रूप में किया है। विवेच्य उपन्यास की नायिका सारंग है। वह अपनी बहन रेशम की हत्या का बदला लेना चाहती है। रेशम के ससूरालवाले को वह कोर्ट में घसीटती है। लेकिन उसे न्याय नहीं मिलता। गवाहों को बदलकर रेशम के ससुरालवालें को वह कोर्ट में घसीटती है। लेकिन उसे न्याय नहीं मिलता। गवाहों को बदलकर रेशम के ससुरालवाले केस जीतते है। हमेशा हमें यह देखने को मिलता है कि हमारी न्यायव्यवस्था में फैला भ्रष्टाचार हुआ है। आज तक कभी भी किसी गरीब को न्याय नहीं मिला है। न्यायव्यवस्था की कमजोरी हमारे सामने आती है। सारंग, जो एक औरत होकर भी हायकोर्ट में जाती है। और अपनी बहन पर अन्याय के खिलाफ लडती है। लेकिन उसे निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता। सारंग अपने बहन के हत्यारे डोरिया को शिक्षा दिलाने की जी जान से कोशिश करती है। लेकिन बेटे की जान को खतरा जानकर रंजीत भी सारंग का साथ छोड देता है। सारंग नारी की सुरक्षा, समानता एवं अस्तीत्व जैसे अधिकारों के लिए भ्रष्ट समाजव्यवस्था से संघर्ष करती है।

अतरपुर गॉव के इतिहास में नारीयों पर हुए अत्याचारों की दास्ताने दर्ज है। उसमें रस्सी के फंदे पर झूलती रूक्मिणी, कुएँ में कूदनेवाली रामदेई, करवन नदी में समाधिस्थ नारायणी अब इनके बाद रेशम गर्भ से होते हुए भी निर्दयी लोगों की शिकार हुई। ये बेबस औरते सीता

मइया की तरह भूमिप्रवेश कर अपने शील सतीत्व के खातिर कुरबान हो गई।

विधवा बनी रेशम को उसकी सास पेट का बच्चा गिराने के लिए विषैली दवा पिने को देती है इसमें जब वह नाकामयाब होती है तो देवर डोरिया उसे मिट्टी के ढेर के नीचे गाड़ देता है। यहॉ रेशम के साथ उसके बच्चे की भी हत्या की जाती है। हमें यहॉ भ्रूणहत्या की समस्या देखने को मिलती है। आज के वैश्वीकरण के युग में अतरपुर जैसे गॉवो में स्त्रीयों पर ससुराल के इसका चित्रण यहॉ देखने को मिलता है। 'चाक' में सारंग के रूप में ग्रामीण नारी की पीडा उसके विद्रोह और संघर्ष का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। सारंग एक नारी होकर भी चुनाव के क्षेत्र में उतरकर प्रधान पद के लिए अपना पर्चा भरती है। उसकी साहसी वृत्ती के दर्शन हमें होते है। राजनीति के क्षेत्र में गॉव की स्त्रिया भी सक्रीय सहभाग लेते हुई अपने अस्तित्व को बरकरार रखती है। प्रस्तुत उपन्यास में ग्रामीण नारी की पीडा के प्रति गहरी संवेदना का चित्रण यहॉ हुआ है। निम्नवर्गीय समाज में भी जातिगत भेदभाव का चित्रण देखने को मिलता है। अतरपूर गॉव में स्कूल में अफीम खाकर आनेवाले नेंकसे मास्टर को देखकर, ग्रामीण स्कूल व्यवस्था में फैली दयनीय दशा देखन को मिलती है। अतरपुर गॉव की विकास प्रक्रिया का चित्रण भी किया है। गॉव में आयी सडक बिजली, रेडिओ, टेलिविजन को दिखाया है। ग्रामीणों की मनोवैज्ञानिक पहलुओं का चित्रण, गॉव की भ्रष्ट राजनितिक व्यवस्था का चित्रण और रूदनविरहित गतिशील नारी पात्रों का चित्रण आदी विवेच्य उपन्यास की महत्वूपर्ण विशेषताएँ है।

विवेच्य उपन्यास की नायिका सारंग अपने उदात्त मनोभावों से युक्त अपने अधिकारों के प्रति जागरूक, विवेकशील, संवदेनशील,

संगठनशील और व्यवहारकुशल, दृढसंकल्पी, रचनाधर्मी पात्र के रूप में अपनी विशेषताओं को लेकर सामने आती है। प्रस्तुत उपन्यास परंपरागत नैतिक मापदंडो पर प्रश्नचिन्ह लगाकर उसमें सुधार की मॉग करता है। 'चाक' में नारीपर हुए अत्याचारों का चित्रण दिखाया है। रेशम अपने पति के मृत्यु के बाद विधवा होती है, लेकिन विधवा होने के बाद भी वह गर्भधारण करती है। इस बात को लेकर उसके ससुरालवाले उसपर अत्याचार करते है आखिर में उसकी हत्या करते है लेकिन उन लोगों को कोई दंड नहीं मिलता वह खुलेआम घुमते है। न्यायव्यवस्था की कमजोरी भी हमारे सामने आती है। नारी पर हो रहें अत्याचारों का चक्र सदियों से चला आ रहा है इस चक्रव्युह को तोडने की मॉग विवेच्य उपन्यास करता है। इसलिए इस उपन्यास का नाम 'चाक' सार्थक है। अपने आप में यह एक मौलिक उपन्यास है।

२.२ 'अगनपाखी' की कथावस्तु :—

मैत्रेयी पुष्पा का विवेच्य उपन्यास प्रकाशन क्रम से सातवॉ उपन्यास है। इसका प्रकाशन २००१ में हुआ। विवेच्य उपन्यास 'स्मृतीदंश' का पुनर्नवीकरण है। फिर भी यह उपन्यास अपने आप में महत्ता लिया हुआ है। इस उपन्यास के बारे में मैत्रेयीजी लिखती है कि,"अब यह एक नया उपन्यास है। हो सकता है पात्रों के नाम और स्थान वही हों, मगर अब वहॉ का इसमें कुछ भी नही। अगर मैं पात्रों और स्थानों के नाम बदल देती तो भी कोई अंतर न पडता। 'अगनपाखी' उतना ही नया होता।"[१]

विवेच्य उपन्यास में मैत्रेयीजीने बुंदेलखंड के ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। इस उपन्यास के केंद्र में नारी—जीवन ही रहा है। ग्रामीण नारी की संघर्षशीलता का चित्रण विवेच्य उपन्यास में किया है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ ६

विवेच्य उपन्यास के शुरूवात में कचहरी के वातावरण का चित्रण दिया है। 'भुवन' जो इस उपन्यास की नायिका के रूप में है। वह अपने जेठ कुँवर अजयसिंह के खिलाफ कचहरी में मुकदमा दायर करती है और अपने पति के जायदाद का हक माँगती है। तब गॉव के लोग भुवन को देखकर चकीत होते है और उसे देवी का अवतार मारते है, तो कुछ लोग मानते है की उसका पुनर्जन्म हआ है। उनका मानना गलत नहीं क्योकि चार महीने बाद वह लोगों के सामने आयी थी। उसके जेठ भी मानते है कि उनके भाई की घरवाली ने बेतवा नदी में डूबकर जान दी थी। उस वक्त भुवन के बहन का बेटा चंदर भी था। तब उसे अपने बचपन से लेकर आज तक की सारी बातें याद आती है। पूरे कथा का विवेचन चन्दर ने अपने मुँह से किया है। पिछली सारी बातों का बयान और पिछली सारी बातों की यादे उसने बतायी है। यह इस उपन्यास की खासियत है।

भुवन के पिताजी का नाम अमानसिंह है। उन्हें मन्नू नाम की बडी बेटी है। उसे तीन बेटे है उनका नाम है — चन्दर, बिरजू और लल्लू। मन्नू अपने मायके शीतलगढ़ी गॉव में हमेशा आया करती है। चन्दर के नाना अमानसिंह फौज में थे। वह अपने पिता के मरने पर फौज से छुट्टी लेकर गॉव आते हैं मगर फिर लौटकर नहीं जाते। वह गॉव में ही किसान बनकर रहते है। उनके किसान के शरीर में फौजी का बल था। उनके हौसले बुलन्द थे। लेकिन गॉव का मुखिया उन्हें किसान न मानकर परदेसी मानकर उनके जमीन का कुछ हिस्सा खुद हथियाना चाहते थे। लेकिन मुखिया की बातें अमानसिंहने नहीं मानी और उन्होंने खेत जोतकर बोया भी, साथ में फसल भी तैयार कर ली। नानी, चंदर को बताती है कि, अमानसिंहने राइफल की जगह हल—फावडा हाथ में लिया था। लेकिन मुखिया ने बेरेहमी

के साथ सारे खेत की फसल कटवा डाली। तब नानाजी ने गुस्से के साथ मुखिया को अपने हाथों से मार डाला। गॉव के लोगों ने उसे भाग जाने की सलाह दी। तो कुछ लोगों ने सुप्रीम कोर्ट तक केस लड़ने को कहा। लेकिन मुखिया के लोगोंने अमानसिंह को मार गिराया। तब चंदन की नानी और भुवन दोनों अकेले हो गएँ। भुवन के पालन–पोषण और शादी की जिम्मेदारी नानी के ऊपर आ गयी।

अमानसिंह ने अपनी बडी बेटी मन्नू की शादी चौदह साल की अवस्था में बरूआसागर के बरजोरसिंह से की थी। और छोटी बेटी भुवन को गेंदारानी के गोद में तब डाला। भुवन के जन्म के चार महिने बाद चंदर का जन्म हुआ। इसप्रकार मौसी और बहनौत दोनो संग–संग पले–पढ़े। इकठ्ठे खेलते और झगडते भी थे।

भुवन की बहन मन्नू अपने तीनों बेटों को लेकर बार–बार शीतलगढ़ी अपने मॉ से मिलने आती। वहॉ भुवन के साथ चंदर और दोनो भाई खेलते, भुवन किसी गाईड की तरह गॉव का इतिहास–भूगोल समझाती। लेकिन भुवन की मॉ को इसकी इन्ही हरकतों पर गुस्सा आता। नानी चंदर को भी ताने सुनाती। तब भुवन चंदर को नानी की बातें बूरा लगे, इसलिए नयी कहानियॉ सूनाती। और उन्हें मोह लेती। चंदर का मानना था कि उसकी अम्मा और नानी से ज्यादा अकलमन्द भुवन ही थी। भुवन चंदर और उसके भाईयों को बाग के भाई–बहन के नयी रीति की और गौरी के ताल की कहानी सुनाती है। एक दिन लल्लू को बहुत भूख लगी थी तब भुवन ने पनका मैत रानी के घर की रोटी और बैंगन लल्लू को खाने को दिया, यह बात चंदरने अपने नानी को बतायी तब भुवन की मॉ ने उसकी बहुत पिटाई की। उस वक्त भुवन सिसकियॉ देकर बहुत रोई थी। उस वक्त चंदर भुवन की यह हालात देखकर अपराध के

बोझ के तले धीरे–धीरे दब गया। धीरे–धीरे चंदन, भुवन की ओर आकर्षित हो गया। और उससे प्यार करने लगा।

चंदर जवान होने पर भी नानी को देखने के बहाने भुवन से मिलने जाता। चंदर के ऑखो के सामने भुवन की एक प्रतिमा तैयार हो गयी थी, जैसे उसे भुवन राजा जी के बाग की रानी, गौरी के ताल की मैतरानी और नौवीं कक्षा के इम्तहान के दौरान देखे जानेवाली फिल्म की नायिका के रूप में सामने आती है। भुवन की मॉ दिन–रात भुवन की शादी के चिंता में घेरे रहती। जब की चंदर शीतलगढ़ी आता, तब नानी उसके लिए अच्छा सा रिश्ता ढुँढने को कहती।

चंदर बडा होने पर अपने 'करियर' पर ध्यान देना चाहता है। इसलिए वह प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षत्कारों में हिस्सा लेता है। हारकर भी हार का प्रतिरोध करते हुए आगे बढ़ता है। एक दिन उसके पिताजी उसे नौकरी मिलने की खुशखबरी सुनाते है। पिताजी उसे कहते है कि उसे 'असिस्टंट डेवलपमेंट आफिसर' की पोस्ट मिली है। इस नौकरी से चंदर की जिंदगी ही बदल जाती है और वह भुवन को भूलाने की कोशिश में रहता है। उसे ट्रेनिंग के लिए भेज दिया जाता है वहॉ वह अपना जीवन बदलने के लिए नए दोस्त, नई जानकारियॉ और नया रूतबा अपनाकर नएपन में ढलने लगता है। वहॉ उसे भुवन के बारे में खबर मिलती है कि भुवन के खलिहान में किसी दुश्मन ने आग लगा दी, लेकिन उस ओर वह ध्यान नहीं देता।

लेकिन भुवन हमेशा चंदर की खयालों में खोयी रहती है और बिरजू से उसके बारे में पूछताछ करती है कि वह कब शीतलगढ़ी आएगा? उसे कब छुट्टी मिलेगी? एक दिन बिरजू चंदर को भुवन की शादी तय होने की खबर सुनाता है तो चंदर को बहुत बडा धक्का

पहुँचा उसके ऑखो के सामने अंधेरा छा जाता है। उसके पिताजी ने ही भुवन की शादी तय की। चंदर के अम्माने चंदर को चिठ्ठी लिख दी थी कि वह एक हफ्ते की छुट्टी लेकर हर हालत में ब्याह के लिए आए। और लिखती है कि भुवन के ससुरालवाले बडे लोग है, उनके यहॉ साढ़े तीन सौ बीघा शेत, तेल की मिल और बारह दुकानें किराए पर दी है। उन लोगों की स्वागत के लिए तैयारी करने के लिए चंदर अपने साथ कुछ दोस्तों को भी ले आए यह भी खासतौर पर कहती है। चंदर बहुत सोचने पर यह निष्कर्ष निकालता है कि वह उस विवाह में नही जाएगा। और वह चिठ्ठी लिखता है कि दफ्तर का अर्जेण्ट काम होने के कारण वह शादी नहीं आएगा। आखिर में भुवन की शादी विराटा के रहनेवाले कुँवर विजयसिंह से हो जाती है।

चंदर को लगता है की भुवन अपने ससुराल में सुख से रहती होगी उसे किसी बात की अब कमी नहीं। लेकिन चंदर हमेशा यह बात सोचता कि इतने बडे रईस लोगोंने आखिर गरीब किसान की लड़की क्यों पसंद की? सच में चंदर के मन में उठी आशंका सोचने लायक थी।

भुवन शादी के बाद थोडे दिनों में नौकर के साथ मायके आती है। और आतें ही वह महामाई के मंदिर पर पूजा करने जाती है और देवी के चरणों मे सिर झुकाकर जोरों से रोने लगती है। मॉ और बहन के पूछनेपर वह रोते हुए कहती है कि मॉ का दामाद पागल है। लेकिन मॉ को उसकी बातों पर विश्वास नहीं होता। भुवन अपने मॉ से पूछती है कि क्या देखकर उसकी शादी की? तब मॉ बताती है कि वहॉ सारा सुख है। तब भुवन कहती है की पागल पति के साथ रहने में क्या सुख होता है? दोनों का झगडा होता है। तब सारी बातें

अपनी बहन मन्नू को बताती है। वह अपने जिज्जी को रोते हुए बताती है की उसका पति सुख और दुख को जानता नही हमेशा खुद को दुख ही देता रहता है। सर्दी की रात में हाथ पॉव धोने निकलता है। शीत रात में ऑगन के कोने में बैठता है। जो खुद करता है वह अपनी पत्नी भुवन को करने के लिए कहता है। इन सारी बातों को बताकर भुवन अपना दिल हलका करती है।

भुवन की मॉ विजयसिंह का हाथ–पॉव धोना पागलपन नहीं मानती। उल्टे भुवन को गालियॉ देती है। और उसकी पिटाई करती है। और खुद भी जोरों से रोने लगती है। मॉ अपने बेटी भुवन को समझाती है कि, बेटी तुम तप में उतरी हो, घडी–घडी आदमी नही बदलते तुम कोई वेसा नहीं। तेरे तप से विजयसिंह ठीक हो जाएँगे। इस प्रकार भुवन को वह समझाती है। भुवन ससुराल जाने को तैयार नहीं होती तब मॉ उसे समझाकर एक महीना मायके में रहने की इजाजत देती है। कुछ दिनों के बाद कुँवर अजयसिंह भुवन को लेने आते है। भुवन भी विराटा जाने के लिए तैयार होती है। भुवन अपने ससुराल जाती है। भुवन की मॉ चंदर को शीतलगढ़ी बुलाती है। शीतलगढ़ी जाने पर उसे पता चलता है कि भुवन को जोगिन बनाया है। इस बात से नानी रोती है तब चंदर समझाता है वह जोगिन बनकर घर में रहती है कहीं जंगल में निकलकर नहीं गयी। चंदर की बातों से नानी को सहारा मिलता है। वह नानी को समझाता है कि भुवन की कोई चिठ्ठी नहीं आयी, जोगिन की बात अफवाह हो सकती है। भुवन अपने पति विजयसिंह का इलाज कराना चाहती है। लेकिन उसके ससुरालवाले मनोरूग्ण विजयसिंह के इलाज में जादू–टोना, मंत्र–तंत्र ओर यज्ञ आदि कर्म कांडो का सिलसिला शुरू रखते है। चंदर की अम्मा उसे बताती है कि भुवन

की सास विजयसिंह की औलाद देखना चाहती है। पागल बेटे का वारिस चाहती है। मन्नू चंदर को भुवन की अवस्था देखने के लिए उसे भुवन के पास जाने को कहती है। चंदर विराटा जाकर उसे देखकर आने को कहती है। चंदर विराटा जाता है तब भुवन खुश होती है। भुवन अपनी हकीकत बताती है। वह अपने पति की इलाज के लिए राजस्थान गयी थी उससे पहले उनाववाले बाबा के पास उससे पहले भगवंतपुरा के मठ पर और उससे पहले कई बाबाओं के पास वह विजयसिंह को लेकर गयी थी। डरावने स्वामी का मुँह बार–बार न देखना पडे इसलिए उसने कंठी पहनाई थी। चंदर कहता है कि वह विजयसिंह को मानसिक अस्पताल में इलाज के लिए ले जाएगा। तब भुवन कहती है कि यह कोशिश उसने की लेकिन उसे कंठी पहनाकर तंत्र–मंत्र से स्वामी की जोगिन बनाया। उसी प्रकार चंदर को भी स्वामी का चेला बना देंगे यह बात वह जब चंदर से कहती है तब वह उसका गुस्सा ठंडा करने को कहकर उसे हिम्मत देता है। वह अपनी ऑखो से देखता है कि भुवन अपने पति की किस प्रकार सेवा करती है। वह पति को शहद में से दवा देती है, कपडे से देह पोंछती है, दूध पिलाती है। इस प्रकार दिन–रात उसकी सेवा करती है।

चंदर देखता है कि भुवन रोज सुबह जल्दी उठकर देवी की पूजा करने मंदिर जाती है। वह घर के बाकी लोगों से मिलता है। तब उसकी सास चंदर को बताती है कि भुवन रोज मंदिर में पूजारी के बेटेसे मिलने जाती है और दूराचारी कहती है लेकिन चंदर को भुवन के दुराचरण पर विश्वास नहीं होता। चंदर उल्टा उसकी सास से कहता है उन्होंने भुवन को छला है। तब सास कहती है कि हमने किसकी के साथ धोका नहीं किया। बरूआसागरवाले के लडके की नौकरी लगाई

उसके बदले उन्होंने अपनी साली का ब्याह विजयसिंह से किया। तब चंदर को अपने पिता बरजोरसिंह की हरकतों पर शरम आती है उसे पता होता है कि उसे नौकरी के बदले भुवन के विवाह की सौदेबाजी हुई है।

चंदर, भुवन को बिना बताए घर से निकलता है और मंदिर में जाता है। वहॉ पूजारीजी उसे हिम्मत देते है। और भुवन की जिम्मेदारी खुद लेते है। उसे अपनी लडाई खुद लडने को कहते है। चंदर वापस गॉव आता है। और पिताजीसे झगडता है।

एक दिन विजयसिंह की तबीयत बिगडती है। मनोरूग्ण विजयसिंह को आगरा के मानसिक अस्पताल में दाखिल किया जाता है। भुवन बहुत दुखी होती है। उसमें भी क्षोभ और उद्वेग बढता है। और अस्पताल में ही विजयसिंह का देहांत होता है। पति विजयसिंह के मृत्यु के वजह से भुवन को कुलक्षिणी करार दिया जाता है। पति के चिता के साथ सती होने की भुवन जिद की बात प्रचारित की जाती है। भुवन को सती की भॉती सजाया जाता है। उसकी जेठानी उसे जेवरों से सजाती है तब उसकी सास भुवन की आखरी इच्छा पूछती है। तब भुवन गॉव के देवी दुर्गा के पुजन की इच्छा आखरी ख्वाईश के रूप में बताती है।

भुवन को उसकी आखरी ख्वाईश के मुताबिक मंदिर भेज दिया जाता है। मंदिर के पुजारीजी भुवन की जान बचाने के लिए उसकी मदद करते है। इतनी छोटी उम्र में भुवन सती जाने की बात से उन्हें एतराज होता है। चंदर को दिए वादे के मुताबिक वह भुवन की जिम्मेदारी लेते हुए उसे देवी के मंदिर के गर्भग्रह के गोपनीय द्वार से सघन वन में बनी कुटी तक पहॅचाते है। भुवन की सुरक्षा के लिए उसे अकेली न छोडकर राजेश की सहायता ली जाती है। साथ में

चंदर को भी सघन वन में बनी कुटी में बुलाते है। कुँवर अजयसिंह के घात से बचाने के हेतु चंदर भुवन को साथ लेकर बीहड़ की पगडंडियों पर चला जाता है। उधर अजयसिंह कें आदमी मंदिर पर हमला करते है और पुजारी से भुवन के बारे में पुछते है। उसके कोई जवाब न देने पर उसकी हत्या करते है। भुवन को मंदिर के आस पास बहुत जगह ढुँढ लिया जाता है। हपास के बेतवा नदी में छलाँग लगाकर भुवन की आत्महत्या की बात सारे इलाके में फैल जाती है। भुंवन के ससुरालवाले उसकी लाश न मिलनेपर उसका पुतला बनवाकर और उसे सुहागिन की तरह सजाकर विजयसिंह की चिता पर समर्पित किया जाता है। यह सारी बाते चंदर को कचहरी में याद आती है। भुवन चार महीने बाद अजयसिंह के सामने आती है और अजयसिंह की हकदारी पर एतराज करती है। कचहरी में अपने पति विजयसिंह की जायदाद का हिस्सा माँगती है। इस प्रकार चंदर भुवन के चरित्र को हमारे सामने रखता है। यहाँ उपन्यास की मौलिकता हमारे सामने आती है।

❖ निष्कर्ष :—

मैत्रेयी पुष्पाजी का कथासाहित्य विशाल और मौलिक है। उसमें विवेच्य उपन्यास 'स्मृतीदंश' का पुनर्नवीकरण है। मैत्रेयीजीने 'नारी—जीवन' को केंद्र में रखकर कथासाहित्य की रचना की। उसमें से 'अगनपाखी' उपन्यास भुवन की जीवनगाथा को हमारे सामने रखता है। भुवन नामक ग्रामीण नारी का चित्रण इसमें हुआ है। भुवन को छोटी उम्र में ही कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। छोटी उम्र में ही वह पिता की छत्रछाया से वंचित होती है। उसकी सारी जिम्मेदारीयाँ माँ पर आती है। माँ खेती में काम करती है। भुवन भी घर के सारे काम करती है। साथ ही खेतों में भी काम करने जाती

है। इस प्रकार वह एक अच्छे बेटी का फर्ज निभाती है। भुवन की बहन मन्नू का बेटा चंदर उसका हम उम्र है। दोनों एक साथ खेलते—लडते है। और दोनों में आकर्षण बढ़ता है। बडे होने पर दोनों में प्यार होता है। दोनों का यह प्यार रूढिवादी समाजव्यवस्था के खिलाफ है।

भुवन के शादी की चिंता उसकी मॉ को लगी रहती है। भुवन के बहन के पति भुवन के लिए रिश्ता निकालते है। उसकी शादी मनोरूग्ण विजयसिंह से होती है। शादी के बाद उसे पता चलता है कि अपना पति पागल है। उसका सारा जीवन दॉव पे लगता है। स्वार्थी रिश्ते—नाते की पहचान यहॉ होती है। चंदर के पिता अपने बेटे की नौकरी लगाने के बदले में भुवन का ब्याह एक पागल से कराते है। बेचारी भुवन कां जीवन दु:ख तपों की आग में झुलसता है।
भुवन शादी के बाद भी हिम्मत न हारकर अपने पती का इलाज कराना चाहती है। उसकी दिन—रात सेवा करती है। एक अच्छी परंपरवादी पत्नी का धर्म वह निभाती है। उसका पतिव्रता पत्नीरूप हमारे सामने आता है। भुवन के पति के मृत्यु के पश्चात उसके देवर अजयसिंह पूरी जायदाद के अकेले मालिक बनना चाहते है इसलिए भुवन को बली का बकरा बनाकर उसे सती चढ़ाना चाहते है। अर्थकेंद्रित और स्वार्थांध रिश्तों की पहचान यहॉ होती है। भुवन को सती चढ़ाते वक्त वह होशियारी के साथ मंदिर के पुजारी की मदद से वहॉ से भाग जाती है। यहॉ भुवन के साहसी और सहनशीलवृत्ति के दर्शन होते है। उपन्यास के मंदिर के पुजारी मानवताधर्म का पालन करते हुए उसे सभी हादसों से आगाह करके उसकी जान बचाते है। और खुद कुर्बान होते है। अंत में चंदर भी भुवन को मदद करने के हेतु से उसके पास आता है। भुवन, चंदर के जरिए कचहरी में कुॅवर

अजयसिंह के खिलाफ केस दायर करती है और पति विजयसिंह के जायदाद का हिस्सा मॉगती है। यहॉ भुवन साहसी वृत्ति के दर्शन होते है। अपने हक्क के लिए लड़नेवाली ग्रामीण नारी के दर्शन यहॉ होते है। ग्रामीण समाज में आज भी नारी पर अत्याचार होते है और उसे सती बनाकर बली चढ़ाया जाता है। भुवन जैसी लडकियॉ ग्रामीण समाज की कर्मकांडता और सनातनता का शिकार बनती है। लेकिन अपनी साहस और चालाकी के कारण भुवन बच निकलकर, नए सिरे से अपने मानवीय अस्तित्व एवं अस्मिता के साथ उठ खडे होने में सक्षम लगती है। विवेच्य उपन्यास में भुवन का चरित्र मौलिक बना है। आज के आधुनिक युग में भी ग्रामीण समाज में स्त्रीयों पर अत्याचार होते है। मंत्र–तंत्र, जादू–टोना आदि अंधविश्वासों के दर्शन आज भी समाज में हो रहा है। अनेक नारीयों को सती चढाया जाता है। बल्कि इस प्रथा को राजाराम मोहन रॉयने बंद किया था। लेकिन इसका दर्शन भी मैत्रेयीजीने अपने उपन्यास में किया है।

विवेच्य उपन्यास में रूढ़िवादी ग्रामीण समाज की कर्मकांड–प्रियता और मानव–धर्म की श्रेष्ठता का अंकन यहॉ हुआ है। इस उपन्यास की भाषा सरल और सीधी है। विवेच्य उपन्यास में मैत्रेयीजीने 'ग्राम' और 'नारी' दानों का यथार्थ चित्रण किया है। उनका विवेच्य उपन्यास भी मौलिक बन पड़ा है। उन्होंने समय की गतिशीलता के साथ परिवेशगत परिवर्तन की मॉग की है।